आंटी मिन्नी और बवंडर

मैरी स्किलिंग्स प्रिगर
चित्र: बेट्सी लेविन



आंटी मिन्नी और उनके नौ भतीजे और भतीजियाँ सभी कैनसस में एक छोटे से फार्म पर रहते थे. वे वसंत में पौधे लगाते थे और गर्मियों में कटाई करते थे. पतझड़ में वे सर्दियों के लिए अपनी उगाई हुई फसल को तहखाने में संग्रहीत करते थे.

एक अंधेरे और हवादार दिन, उनकी दिनचर्या मे तब बाधा आती है उन्हें आकाश में एक बड़ा कीप के आकार का बादल दिखाई देता है. बच्चे डर जाते हैं, लेकिन आंटी मिन्नी जानती हैं कि उन्हें क्या करना है. बिल्कुल कुछ भी उन्हें रोक नहीं सकता है - यहाँ तक कि एक बवंडर भी नहीं!





आंटी मिन्नी और बवंडर

मैरी स्किलिंग्स प्रिगर

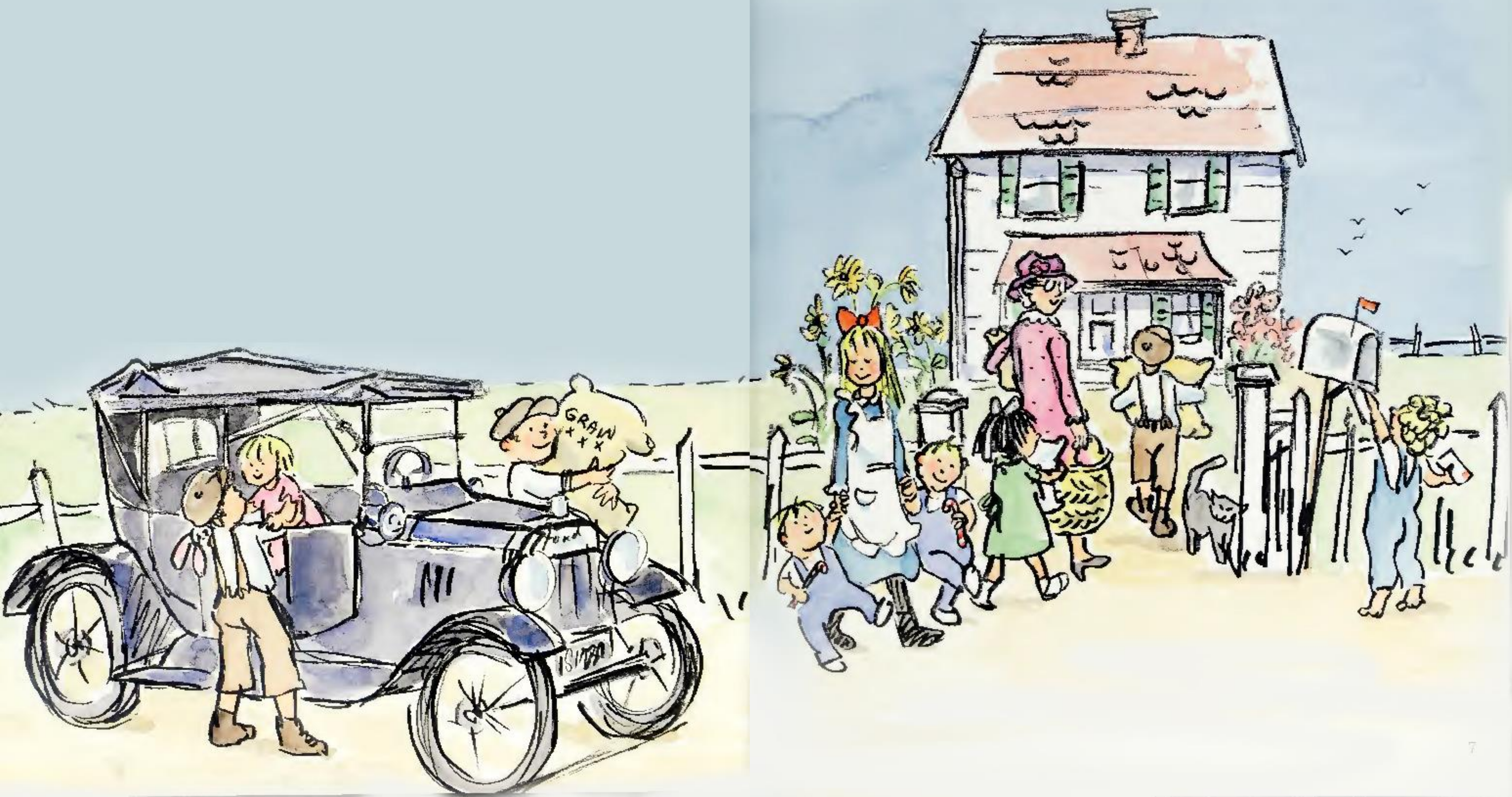
चित्र: बेट्सी लेविन



मिन्नी मैकग्रानाहन कैनसस में एक छोटे से फार्म पर एक छोटे से घर में रहती थीं.

उनके नौ अनाथ भतीजे और भतीजियाँ थीं, और वे सभी उनके साथ रहते थे.

वे उन्हें "आंटी मिन्नी" बुलाते थे.



जैसे-जैसे आंटी मिन्नी के बच्चे बड़े होते गए, छोटा सा घर और भी ज़्यादा भीड़भाड़ वाला होता गया.

कभी-कभी बच्चे नाराज़ हो जाते थे, और कभी-कभी वे शिकायत भी करते थे.

तब मिन्नी कहती थीं, "ठीक है, हमारे पास ज़्यादा जगह नहीं है - लेकिन हम एक-दूसरे के पास तो हैं."





जब मिन्नी को अपने बच्चों का बुलाना होता था, तो वह सामने के बरामदे पर खड़ी होकर स्कूल की पुरानी घंटी बजाती थीं.

घंटी बजती थी, बजती थी, बजती थी.

और तब आंटी मिन्नी के सभी बच्चे दौड़े हुए आते थे.



घंटी उन्हें रात के खाने के लिए बुलाती थी. और घंटी कहती थी, "देर मत करो."



जब कोई परेशानी होती थी, तो भी घंटी बच्चों को बुलाती थी.

"जल्दी आओ, गायें बाहर हैं," आंटी मिन्नी चिल्लाती थीं.



जब कोई मेहमान आता था, तो भी घंटी बजती थी.

"नहा लो. देखो पादरी बिल हमें बुलाने आए हैं. चलो, हम लोग अच्छे कपड़े पहनकर चलें," आंटी मिन्नी कहतीं.



वसंत आते ही, मिन्नी और उसके बच्चे बगीचे में पौधे लगाते और जुताई करते थे. उन्होंने एक बिजूका बनाया और पक्षियों को डराने के लिए आंटी मिन्नी की पुरानी पोशाक और टोपी उसे पहना दी.

"हम नहीं चाहते कि वे पक्षी हमारी फसल खाएं," मिन्नी ने हंसते हुए कहा.

गर्मियों में, वे मक्का, सेम, टमाटर और मटर तोड़ते थे और उन्हें सर्दियों के लिए डिब्बाबंद कर देते थे. "जब बाहर ठंड होगी, तो ये सब चीज़े खाने में अच्छी लगेंगी," आंटी मिन्नी ने अपने बच्चों से कहा.





पतझड़ में, जब पत्ते झड़ने लगते, तो मिन्नी और उनके बच्चे सेब तोड़ते थे.

मिन्नी ने बच्चों को सेब का मक्खन, सेब की चटनी और सेब का साइडर कैसे बनाया जाता है यह सब सिखाया था.

वे शलजम, आलू और गाजर को बैरल में रखते और उन्हें घर के बगल में एक पहाड़ी पर स्थित तहखाना में संग्रहीत करते थे.





छोटे बच्चे तहखाने में जाने से कतराते थे.

क्योंकि छोटे साँप और मेंढक वहां के ठंडे स्थानों में छिपे होते थे.

साँप, दरारों और कोनों में रेंगते रहते थे.

बैरल के अंदर हाथ डालने पर मेंढक बाहर कूद पड़ते थे.

लेकिन आंटी मिन्नी उनसे डरती नहीं थीं. वह अपने एप्रन में जीवों को उठातीं और उन्हें बाहर फेंक देती थीं.





जब सर्दी आती तब बर्फ जमीन को ढक देती थी.

तब मिनी और बच्चे तहखाने में जमा किया हुआ खाना निकालकर लाते थे.

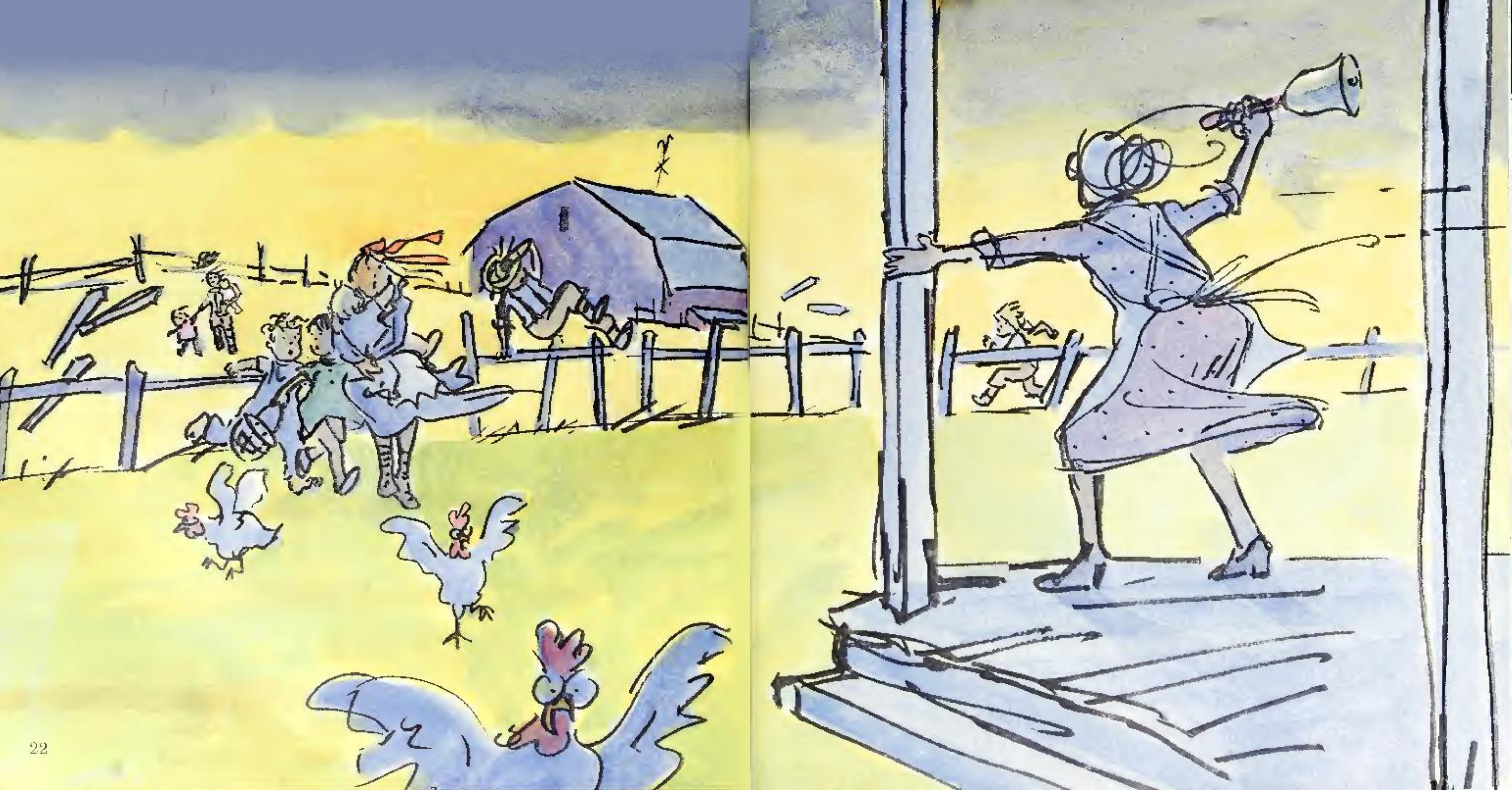
जब वे अपनी रोटी पर सेब का मक्खन लगाते तो वे कहते, "कितना स्वादिष्ट है!"

"इसका स्वाद गर्मियों जैसा ही है."

एक वसंत के दिन, आसमान में तूफानी बादल छा गए. आंटी मिन्नी ने अपने बच्चों से कहा, "हमें अपना काम करेंगे, लेकिन घंटी की आवाज़ पर ज़रूर ध्यान रखना. अगर ऐसा लगेगा कि तूफान आने वाला है, तो मैं घंटी बजा दूँगी. फिर तुम सब दौड़कर घर आना."

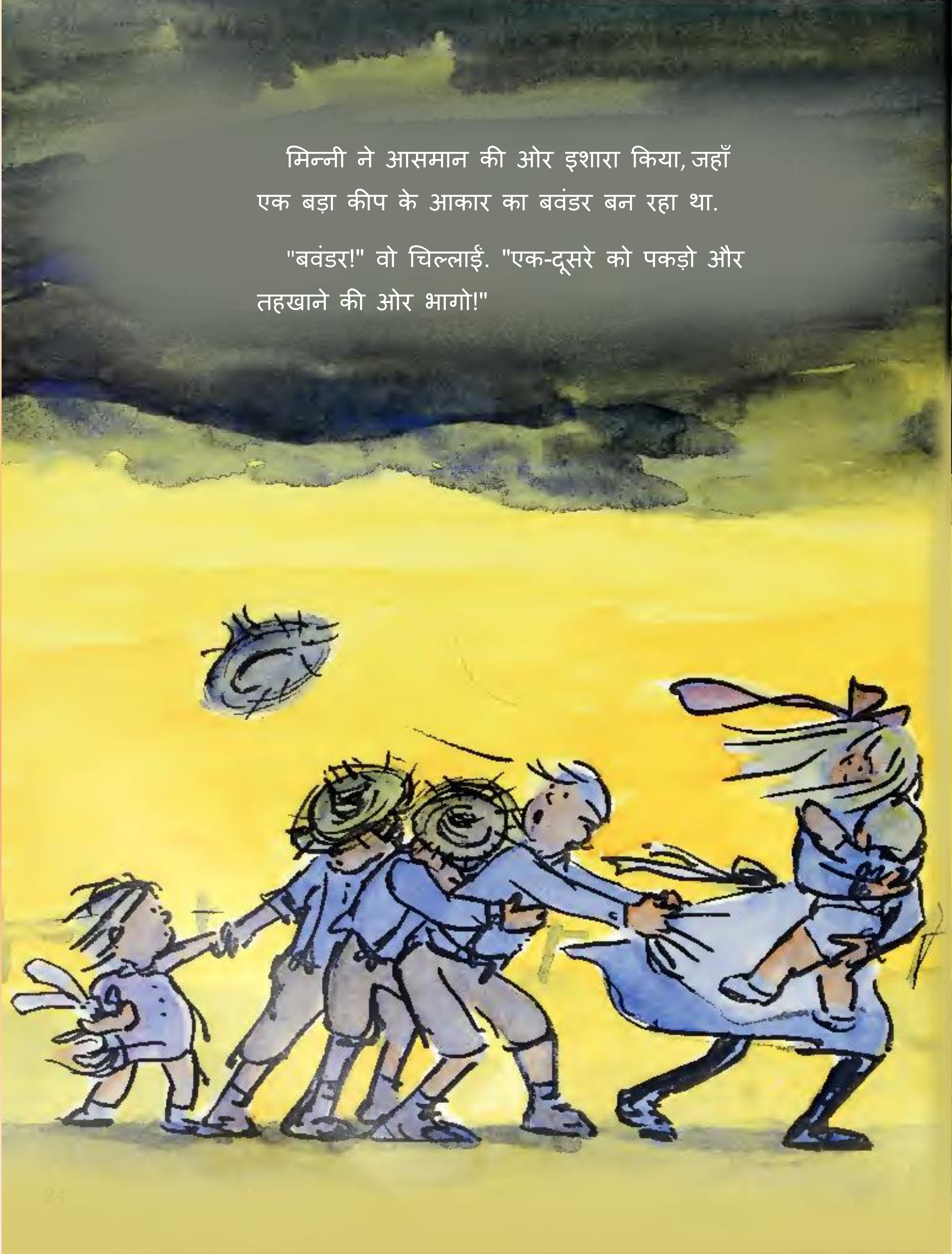


कुछ देर में बादल और भी काले हो गए. बिजली चमकने लगी. मिन्नी दौड़कर सामने के बरामदे में गईं और उन्होंने घंटी बजाई. टन, टन, टन "जल्दी आओ!" उन्होंने कहा. फिर मिन्नी के बच्चे मुर्गी घर से और बगीचे से दौड़े-दौड़े आए.



मिन्नी ने आसमान की ओर इशारा किया, जहाँ एक बड़ा कीप के आकार का बवंडर बन रहा था.

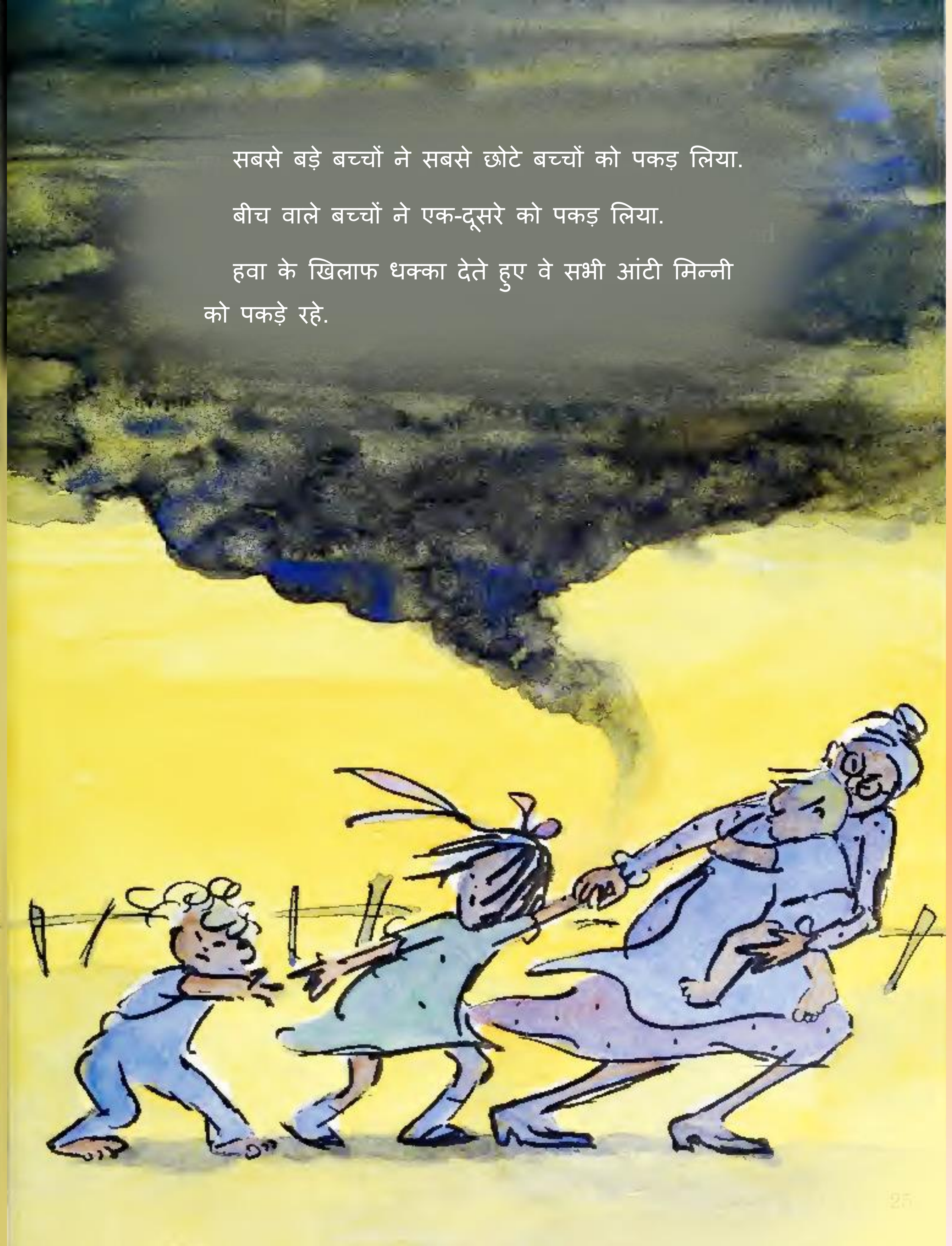
"बवंडर!" वो चिल्लाईं. "एक-दूसरे को पकड़ो और तहखाने की ओर भागो!"



सबसे बड़े बच्चों ने सबसे छोटे बच्चों को पकड़ लिया.

बीच वाले बच्चों ने एक-दूसरे को पकड़ लिया.

हवा के खिलाफ धक्का देते हुए वे सभी आंटी मिन्नी को पकड़े रहे.





उन्होंने तहखाने का दरवाज़ा खींचकर खोला.

फिर वे तहखाने के फर्श पर एक ढेर में गिर गए.

धमाक! आंटी मिन्नी ने उनके पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया.

धमाका! ओले दरवाज़े से टकराए.

हवा में गरजने की आवाज़ आई.

दरवाज़ा हवा के दबाव से ज़ोर से लगातार कराहता रहा.

आंटी मिन्नी और उनके बच्चे अंधेरे में एक साथ इकट्ठे हो गए.

वे उस तहखाने के अंदर सुरक्षित थे.

किसी ने साँपों या मेंढकों के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा.



अचानक वहाँ सन्नाटा छा गया.

"शश्श्श," आंटी मिन्नी ने कहा. "सुनो!" टर्र, टर्र, टर्र!.

"यह मेंढक हैं!" लड़कों में से एक ने कहा.

"वे हमें बता रहे हैं कि तूफान खत्म हो गया है."

"चलो हम बच गए!" बच्चों ने खुशी मनाई.

"और हम अभी भी एक-दूसरे के लिए मौजूद हैं!" आंटी मिन्नी ने कहा.

"अब, देखते हैं कि बवंडर ने क्या-क्या शरारत की है."

उन्होंने तहखाने का दरवाज़ा खोला और वे बाहर निकले.

उन्होंने जो भी देखा उस पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ.

"हे भगवान!" आंटी मिन्नी ने कहा.

"हे भगवान!" बच्चों ने कहा.



"मुझे विश्वास नहीं होता," आंटी मिन्नी ने आह भरी.

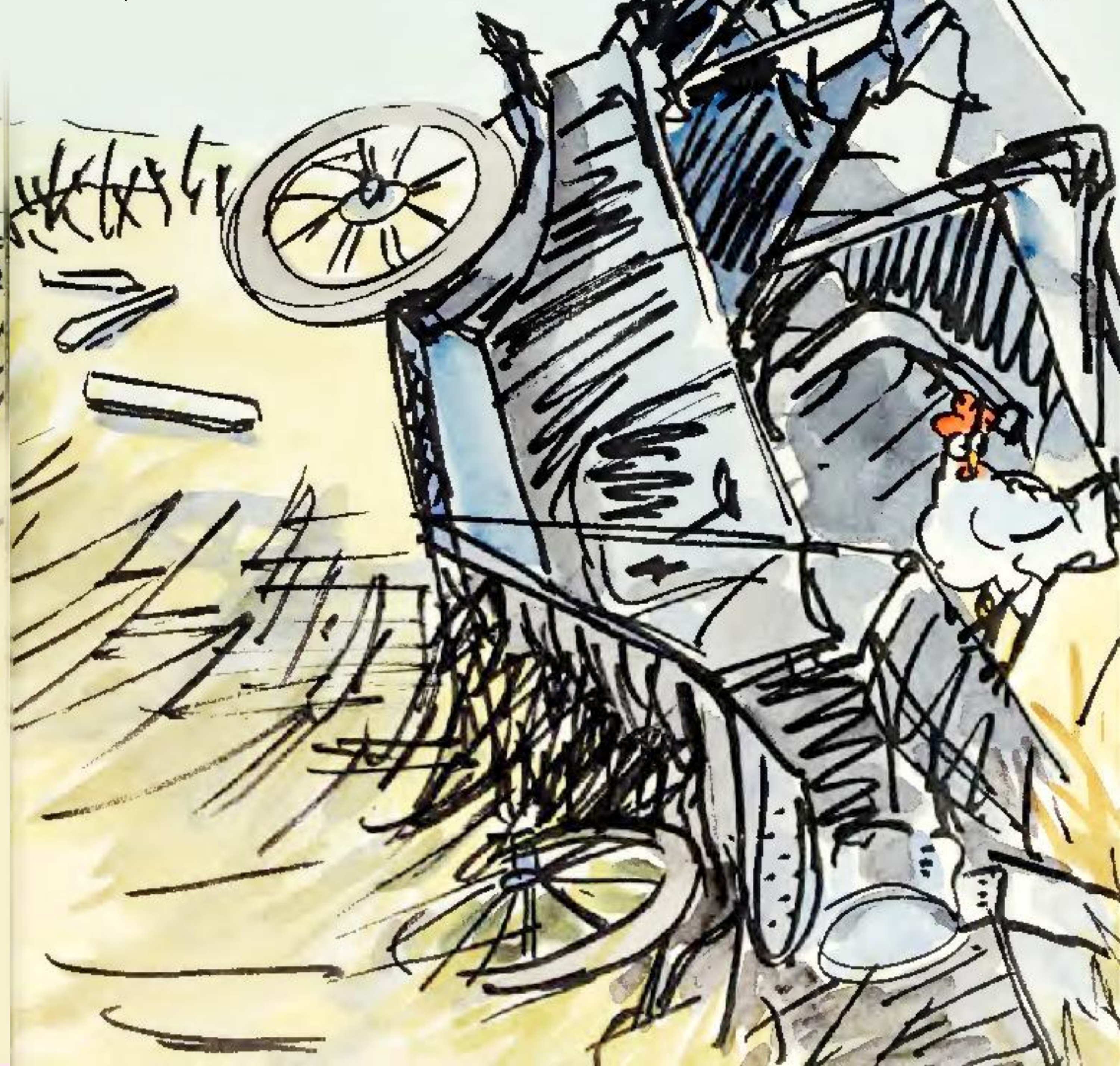
बवंडर ने खेतों के बीच से अपना रास्ता काटा है.

आंटी मिन्नी की मॉडल-टी फोर्ड कार पलट गई थी.

मुर्गी घर और बिजूका गायब हो गए थे.

मुर्गियाँ, पूरे खेत में बिखरी हुई थीं.

गाएँ, सामने के आँगन में थीं.



सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी आंटी मिन्नी का घर.

उनका घर अभी भी खड़ा था!

लेकिन बवंडर ने घर की दिशा पलट दी थी!

घर के सामने का हिस्सा अब जॉनी के घर की तरफ था,

और घर के पीछे का हिस्सा सामने की तरफ हो गया था!

आंटी मिन्नी ने एक शब्द भी नहीं कहा.

उन्होंने दो सबसे छोटे बच्चों का हाथ पकड़ा

और अपने सभी बच्चों को घर के चारों ओर घुमाया.





सबसे पहले, वे एक तरफ चले. फिर दूसरी तरफ चले.

उन्होंने ऊपर-नीचे और चारों तरफ से घर की जांच की.

अंत में, आंटी मिन्नी ने घोषणा की, "देखो, अब इस घर से काम नहीं चलेगा!

हम इस तरह के उल्टे-पुल्टे घर में नहीं रह सकते हैं.

हमारे घर का सामने का दरवाज़ा जॉनी के घर की तरफ नहीं हो सकता है.

"और अब हम अपने घर को मोड़कर सीधा भी नहीं कर सकते हैं.

इसलिए हमें अपने घर के सामने वाले हिस्से को दुबारा बनाना होगा.

हम पीछे के हिस्से पर एक और कमरा बना सकते हैं.

वैसे भी हमारा परिवार इस छोटे से घर के लिए बहुत बड़ा हो रहा है."

"हुर्रे!" सभी बच्चे मिलकर चिल्लाए.





इसलिए उन्होंने दो बछड़े, चूजों का झुंड, और मकई की अगली फसल बेचकर निर्माण सामग्री खरीदी.

मिनी ने शहर से एक बढ़ई को काम करने के लिए बुलाया.

बढ़ई ने बहुत मेहनत की. आंटी मिन्नी और सभी बच्चों ने उसके काम में हाथ बंटाया.

वे सभी मिलकर नया कमरा बनाने में जुट गए.

जब काम पूरा हो गया, तो उन्होंने छोटे से घर के पीछे नए कमरे के निर्माण का जश्न मनाने के लिए एक पिकनिक मनाई.

आंटी मिन्नी के बच्चों को पता था कि वे जब तक वे चाहें, वो अपने इस घर में रह सकते थे.

और, सबसे महत्वपूर्ण बात, वे एक-दूसरे के लिए हमेशा मौजूद थे.



